Gandhi Memorial College Of Education Bantalab

छत्तीस जनों वाला घर

रजत कृष्ण

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रजत कृष्ण का 'छत्तीस जनों वाला घर'

हिन्दी के पूरवी प्रयोगों से समृद्ध और प्रसन्न भाषा में लिखी ये कविताएँ अनुभव-प्रसूत अनुभूति की दृष्टि से, आज की कृत्रिम सरणियों वाली कविताओं में अपनी मौलिक एवं आत्मीय अर्थवत्ता रखती हैं। सचमुच में, बनते हुए एक कवि-व्यक्तित्व की ईमानदार संलग्नता और कर्मठता का अद्भुत अहसास इनके भीतर से गुजरते हुए होता है। आज की दुनिया में जब पूँजी के क्रूर-प्रपंच ने आदमी को न केवल अपने देश-प्रदेश और कुटुम्ब से अलगा कर केवल दाम्पत्य-परिधि की संकीर्णताओं में समेट रखा है तब 'छत्तीस जनों वाला घर' यानी भाई-बहिनों से समृद्ध एक पितृ-परिवार देखकर रोमांच हुए बिना नहीं रहता। इससे आशा बँधती है कि अभी कहीं तो सामाजिकता, सामूहिकता एवं आत्मीयता के छोटे-मोटे सरोकार बचे हुए हैं। किसी बचने-बचाने के सजग उद्देश्य से नहीं, अपने आप। इन कविताओं के मार्फत हम अपने समय के किसान-जीवन के ऊबड़-खाबड़ अंचलों में विचरण करते हैं। मध्यवर्गीय शहरी जीवन के पास अब शायद ही अनुभवों का ऐसा दीप्त-संसार बचा हो। वहाँ अन्तर्विरोधों के अलावा और कुछ शायद ही बचा हो। छाया, श्रम-संलग्न किसान-जीवन पर भी वैसा ही पड़ रही है, जैसे सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण लगता है।

अपनी ज़िंदगी को फूल जैसी चाहने वाला यह युवा कवि उन जिंदगियों से बेखबर नहीं है, जो देश-दुनिया में उसी तरह से मेहनत की रस्सी पर नट की तरह चलती हैं। उसके पड़ोसियों से आज भी जीजा और काका के रिश्ते निभ रहे हैं। ये कविता में बचे रिश्ते नहीं है बल्कि जीवन में बचे हुए रिश्ते हैं। यही वजह है कि रजत कृष्ण उनका सही-सही पता-ठिकाना हमको बतलाते हैं। ऐसा नहीं है कि यहाँ कोई करोड़पतियों-अरबपतियों जैसी समृद्धि है, पर यहाँ आदमीयत का एक हँसता-खेलता सम्पन्न समाज अब भी बचा हुआ है।

(अगले पेज में जारी)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

27/3/2011

छत्तीस जनों वाला घर

(कविता-संग्रह)

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 4956
Dated. 27.12.2023

रजत कृष्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छत्तीस जनों वाला घर

(कविता-संग्रह)

रजत कृष्ण

संकल्प प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छत्तीस जनों वाला घर

© रजत कृष्ण
प्रथम संस्करण : 2011
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : राज कुमावत
आवरण : दिलीप कुमार शर्मा 'अज्ञात', दुर्गापुर (प. बंगाल)
मूल्य : 60.00 रुपये

संकल्प प्रकाशन
बागबाहरा, जिला : महासमुंद (छ.ग.) 493449
फोन : 07707-242578, फैक्स : 07707-242678
मो. : 09755392532, 08959271277
ई-मेल : sarvanam_patrika@yahoo.com

मुद्रक : तरु ऑफसेट, एफ-77, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया
22 गोदाम, जयपुर-302006 (राज.), मो. : 098290-18087

CHHATTIS JANO WALA GHAR
collection of poems by Rajat Krishna
Published by Sankalp Prakashan, Bagbahara, Mahasamund (CG)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबा-काका एवं दीदी को याद करते हुए
दादी के साथ-साथ
माँ-बाबूजी के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

ज़िंदगी फूल की 9
छत्तीस जनों वाला घर 10
खेत 13
धान-किसान से 15
अगहन की सुबह 16
धान मिंजाई के दिन 18
खलिहान में 20
सूखे के दिन 21
दीवाली का दीया 23
अड़ोस-पड़ोस 24
मित्र के घर से लौटकर 26
आसमान का घर 28
सूरज का रथ 31
नीले रूमाल में बँधा चाँद 34
तारों से बातें करते हुए 37
बस एक धरती ही 40
सुंदरता 43
रिश्ते का बनना 44
मैं तुम्हें याद कर रहा हूँ 45
अनुपस्थिति में फैली उपस्थिति 46
स्वप्न के उजड़ने के बाद 47
अँधेरे की उमर 48
मैं धूप का एक टुकड़ा नहीं हूँ 49

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दु:ख की रात	51
जड़ की खातिर	53
मुकाम	54
मैं लौट आया	55
दो मजदूर	57
जगदलपुर के अस्पताल में	59
अस्पताल में स्त्री	61
अस्पताल का नारियल पेड़	62
आदिम-मितान	64
गोधूलि	65
पेड़	67
पवन	70
पानी	73
आग	76
उस आदमी का जीना	79
वे जो बैठे ठाले खाते हैं	80
तिकड़मी	82
हद	85
चुनाव	87
अंबानी के सपनों में पल रहे इस देश में	88
अवमूल्यन	81
दण्ड	93
युद्ध की बात करने से पहले	94
अमेरिकी युग	96
पते वाली डायरियाँ	97
सजा	99
आत्महत्या के बीच	100
मिट्टी, काठ और लोहा	102
सुकाल में	104
जरखरीद-बिक्री	106
बत्तीस डिसमिल जमीन	108

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़िंदगी फूल की

ज़िंदगी बड़ी
फूल की-
डाली में तो महके ही
महके वह
टूट-बिखर कर भी!

ज़िंदगी बड़ी
फूल की-
फूल-सी हो
मेरी ज़िंदगी भी।

(2002)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छत्तीस जनों वाला घर

छत्तीसगढ़ के
एक छोटे से जनपद
बागबाहरा में
छत्तीस जनों वाला
एक घर है
जहाँ से मैं आता हूँ
कविता के इस देश में।

छत्तीस जनों वाला
हमारा घर
नब्बे वर्षीय दादी की
साँसों से लेकर
डेढ़ वर्षीय बिटिया
'खुशी' की
आँखों में बसता
और खुश होता है
कि यहाँ
आने जाने को
एक नहीं, दो नहीं
तीन नहीं
चार दरवाजे हैं...
और घर का एक छोर
एक रास्ते पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो दूसरा
दूसरे रास्ते पर खुलता है।

घर के
दायें बाजू में
रिखीराम का घर है
तो बायें में
फगनूराम का।
रिखी और फगनूराम
हमारे कुछ नहीं लगते
पर एक से जीजा का रिश्ता जुड़ा
तो दूसरे से काका का!

घर के
ठीक सामने
गौरा-चौरा
और पीपल का पेड़ है
जो मेहमानों को
हमारे घर का
ठीक-ठीक पता देते हैं-
यही, हाँ यही घर है
जोहनराम साहू का
सावित्री देवी का
मोहित, शैलेष
अश्वनी, धरम
भूषण, महेश, मानसिंह, रामू
और रजत कृष्ण का

आँगन में तुलसी
तुलसी के बाजू में
जाँता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाँता के बाजू में
बिराजता है
बड़ा सा सिलबट्टा
जिसने दीदी-भैया के
ब्याह की हल्दी का
स्वाद तो चखा ही
चख रहा है
अब स्वाद
भांजी मधु व
भतीजी मेघा की मेंहदी का।

आँगन के बीच में
एक कुआँ है
एक कुआँ है बाड़ी में
बाड़ी से लगा है कोठा
कोठा से जुड़ा है खलिहान
जहाँ हर कार्तिक में
खेत से आता है धान
और लिपी-पुती कोठी
गुनगुना उठती है-
स्वागत है...
आओ नवान्न स्वागत है।

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खेत

हम कहते हैं खेत
और महक उठती है
गंध उस मिट्टी की
जो सिरजी
पुरखों के खून-पसीने से।

हम कहते हैं खेत
और झूम उठते हैं
पेड़ वह
जिनके छाँव तले
सुस्ताते रहे हैं
हल जोतते बाबूजी
हमारे भुखाने पर
निंदाई-रोपाई करती माँ
हमें पिलाती थी दूध।
हम कहते हैं खेत
और चमक उठती है देह
उन धाँवरा और ललहूँ
बैलों की
जो साधते रहे हैं
पानी-बरसात, जाड़ा-घाम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम कहते हैं खेत
और हमारे अंतस जल में
शहद-सी घुल-मिल जाती है
बनिहार-बुतिहारों की
मेहनत कसी बोली
हँसी-ठिठोली !

(2000)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धान-किसान से

धरती की
कोख में
किलक रहा हूँ मैं...

मुझे अब
सूर्य नारायण से धूप
वरुण देव से जल
और पवन देव से
हवा चाहिए।

मैं जड़ जमाऊँगा
पुख्ताऊँगा
लहराऊँगा
भरे मन से
कंसाऊँगा
बिखेरूँगा
दूधिया मुस्कान।

बस
तुम्हारे यह देव सभी
नींद की सेज छोड़
जोड़ दें
मिट्टी संग
अपना मन-प्राण।

(2002)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगहन की सुबह

यह अगहन की
उगती हुई एक सुबह है।

आज सूरज
जैसे सातों घोड़ों पर
सवार होकर निकला है।
हवा ने जैसे
हरेक पाँख खोली है।

छानी में छितराये
कुम्हड़ा-तूमा के नार
शीत में नहाकर
संगे-संग डोल रहे हैं
घर के कमइया
और बनिहार-बुतिहार सभी
हुलस-हुलस के बोल रहे हैं।

सदा चुप-चुप रहने वाली
भौजी के पाँवों की धमक
अँगना से दुआर
दुआर से अँगना को
एकमेक की हुई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोरसी धरे बाबा
भुला अपनी खाँसी
सुलगा रहे हैं चोंगी-पे-चोंगी

यह अगहन की
उगती हुई एक सुबह है।
एक सुबह-
जाँगर पेरते माँ-बाबूजी की रगों में
चौकड़ी भरती।

चौकड़ी भरती इस सुबह को
खेत में खड़े धान पर
हँसिया गिरना है
घर भर की आँखें
उज्जर होना है।

(1996)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धान मिंजाई के दिन

धान का बीड़ा बोहे-
मेरी माँ
खेत से आ रही है
जिसे रोक कर सूरज
एक झलक
देख लेना चाहता है।

चाहते हैं
रास्ते भर के
आँवला-तेंदू-महुआ
पेड़ सबके सब
जिसके लिए
अपनी छाया को घना कर देना।

पर मेरी माँ के पास
मूड़ उठाने तक की
फुरसत नहीं है
नहीं है उसे फुरसत
कि जाने-सुने
या समझे वह
अभी किसी का भी कुछ।

उसकी आँखों में तो
बस खलिहान झूल रहा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी साँसों को
उधर से आती हवा का ही
शऊर पता है।

खलिहान में बाबूजी
धान मिंज रहे हैं
बीड़ा रचते भइया
बिड़हारिनों की राह देख रहे हैं।

(1995)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खलिहान में

बाबूजी धान मिंज रहे हैं
मिंज चुके धान को
माँ ओसा रही है।

भाई पंखा ओट रहा है।
और धान सकेल-सकेल के
बहन माँ को दे रही है।

समझो पूरा घर ही
इस बखत खलिहान में है
लइका-सियान सबके सब
बराबर काम में हैं।

जी जान से कमा रहे
इन सबके बारे में
सोचता हूँ
तो इन-सा धनी-मानी
और प्रतापी
दुनिया भर में दूसरा कोई
लगता नहीं।

सच कहूँ तो
मैं दुनिया के सबसे समृद्ध
सबसे सुखी कुटुंब में जन्मा हूँ।

(1995)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूखे के दिन

दगा दिया आसाढ़ ने
दगा सावन ने
और अब यह भादो
ब्राम्हण-भटरियों
कहाँ बिलम गए वे सब ग्रह-नक्षत्र
कहते रहे जिनके लगते ही
होगा पानी ही पानी...

सूने आकाश ताकती
दादी बुड़बुड़ाती रहती
अक्सर ऐसे ही।

रात की टकटकी
रोज बिस्तर पर ही छोड़
माँ सुबह उठती है
गाय-बैलों को
पेट छोटा करने को कहती हुई
देती है दाना-पानी।

बिना नहाये-खाये
ना जाने
किधर निकल पड़ते हैं भइया
किधर काका
दिन भर के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिशा-मैदान को पहट से निकले बाबा
लौटते हैं दिन चढ़े
रुखे-सूखे दातून धरे।
बाबू जी लौटते हैं खेत की ओर से
'धरती मइया' से करम-दोष पूछते।
पूछते हुए
अब भी मानसून का अता-पता
अंगार-बंधी हवा से !

वे लौटते हैं लगभग संगे संग
और चौखट चढ़ने से पहले
पगड़ी की गाँठों में बैठी धूल को
झटकारते फट् से,
मानो झटकार रहें हों
अकाल की जमती हुई पतें!

(1991)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीवाली का दीया

जिस कमरे में
अंतिम साँसें गिन रहे हैं बाबा
घर में वह सबसे अँधेरा है
शुरू करो वहीं से
दीवाली का दीया बारना।

दीया रख आना फिर
अपने विधवापन पर
धारे धार रो रही काकी के कमरे में।

एक दीया रखो
वहाँ जाम पेड़ के नीचे
एक भाई के बंद बक्से पर
एक बहन की गौना वाली पेटी पर।

बाड़ी-बखरी में
दुआर में कोठार में
चाहे जहाँ रखो दीया
पर एक बचा लेना
घर की देहरी में रखने

कि आते-जाते हरेक चेहरा
जगमग दिखे
कटे हर मन का अँधेरा !

(1995)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अड़ोस-पड़ोस

हमारे घर के फटे-पुराने
पड़ोस की खिड़की से
सिल-तुनकर आते हैं।

खिड़की के रास्ते से ही
जाते हैं पड़ोसी के घर
हमारे यहाँ से
दूध-दही
अचार-पापड़ !

हमारी बाड़ी के
भटा-मूली-गोभी-टमाटर
पड़ोसियों की रसोई में पहुँचे बिना
कभी नहीं झरते।

उनके घर पके
आम-अमरूद-जामुन
बिना हमारे यहाँ पहुँचे
असल स्वाद नहीं देते !

अड़ोस-पड़ोस भर
घूमा करते हैं
हमारी बड़ी चटाई
गंज-परात-हण्डा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब निबटाना हो
छट्ठी-बरही
या काम हो मरनी-हरनी का
दरी-तालपतरी
गियास बत्ती
कुछ भी
हमें ढूँढना नहीं पड़ता है !

(1997)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मित्र के घर से लौटकर

दूर शहर में
रहने वाले
अपने मित्र के घर से
मैं अभी-अभी
लौटा हूँ।

लौटा हूँ जबसे
मित्र के घर को
अपने घर में
घुला-मिला
पाता हूँ।

यहाँ कमरे में
सजी हुई
दस्तकारी
कुछ बहन की
बनाई हुई है
कुछ भाभी की,
अब एक जोड़ा हाथ
इनमें
मित्र की पत्नी का
झाँकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मित्र के घर
मैं पहली बार
गया था
जहाँ मैंने
महसूस किया
मित्र ने अपने घर में
हमारे घर को
बड़े जतन से
समो रखा है।

उसके आँगन में
उतरती है
हमारे यहाँ की धूप।
उनके पिछवाड़े में
फलता है
हमारी बाड़ी का अमरूद।

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आसमान का घर

मनुष्य ने आँखें खोली
तो उसे सबसे पहले
नीला फैला हुआ
आसमान दिखा...।

उड़ना सीखी चिड़िया
तो फड़फड़ाते हुए
उसने पुकारा
आसमान को।

खुशियों की यात्रा
शुरू होती है
आसमान की ओर
खुलती राह से।

दुःख जब
हो जाता है पहाड़-सा
हम जोड़ते हैं हाथ
आसमान की ओर-
सहा नहीं जाता
अब और
दया करो हे दया निधान !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आसमान का घर
बहुत बड़ा
वहाँ से आती हैं
हमारे बच्चों की गेंद
परियाँ-तितलियाँ !

वहीं तो बंधे
घोड़े उस राजकुमार के
जिसकी प्रतीक्षा में
सदियों से जाग रही हैं
हमारी बहन-बेटियाँ !

समुद्र का अंतस
दहकता है
तो कहीं और नहीं
वह दौड़े-दौड़े
आसमान के घर जाता है।

पेड़ जब हरियाता है
स्वागत में
आसमान झुक जाता है।

रोते-बिलखते
बेघरों को
जब पूछते नहीं हैं
हम धरती के ही जन-मन
तब आसमान
नीचे उतरता
उनके बालों पर
उंगलियाँ फेरता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और थपकियाँ देकर
उन्हें लोरी सुनाता है।

आसमान छूने की
होड़ में
युगों-युगों से
कितने-कितने
जतन कर रहे हैं हम
पर आसमान है
कि हर बार
हमें
हमारे कद का
अहसास कराता है।

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूरज का रथ

सूरज के बारे में
कुछ भी कहना
उसे महज
दीया दिखाना होगा।

वह एक ऐसा पथिक है
जो हमारे सफर की
शुरुआत से पहले
दुनिया भर की
कालिमा को
हर रोज बुहारता है।

कभी कोलंबस
तो कभी
तेनज़िंग नार्के को
कभी गाँधी
तो कभी मण्डेला को
जगाता है-
चलो चलें वहाँ...
जहाँ सदियों से
कोई हमारी प्रतीक्षा में
खड़ा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कारखानों, खदानों में
खप रहे
मजदूरों के बीच
पहुँचता है सूरज
और पसीने से
तर-ब-तर
देह की मछलियाँ
थिरकने लगती हैं !

पहुँचता है वह
सिलन भरी
बंद कोठरियों में
और शुरू होता है-
इंट से इंट का संवाद !

राज दरबारों में
अनसुनी की जाने लगती है
प्रजा की आवाज
तब सूरज का रथ
राजपथों पर दौड़ता है
और दहल जाता है
राजमुकुट !

सूरज के पास
वैसे तो
फुरसत नहीं होती है
जरा भी
पर जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं
वह उनके साथ
डोलता और नाचता है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूरज देखता है
मेड़ पर सुस्ताते किसान को
तो खड़ी फसल को
दुलारते-पुचकारते हुए
पूछता है-
इस बार बेटी के हाथ
पीले कर रहे हो ना !

सूरज
मेरी दादी का
सबसे बड़ा संगी है
उसके हाथों रोज सुबह-सुबह
ऊपर बसते दादा के लिए
वह जल भेजती है !

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीले रूमाल में बँधा चाँद

चाँद को
जब भी देखता हूँ
माँ याद आती है
जिसने मुझे
चाँद से
पहली बार मिलाया था-
वो दूर...
देख रहे हो ना
वह तुम्हारे मामा हैं।

जब मैं रोता था
चाँद को दिखा कर
माँ मुझे
चुप कराती थी।

जब भागता था
खाना छोड़कर
मुझे चाँद के हवाले कर
माँ बड़े लाड़ से
खिलाती थी !

जब बड़ा हुआ
और निकला सफ़र में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहली बार,
तो माँ ने
मेरे लिए
बहुत सारी चीजों के साथ
एक नीले रूमाल में
जैसे बांधा था
चाँद को भी
कहते हुए-
कि अँधेरे से घिरो
तो भरोसा करना
इस पर ही।

जब रहा दूर
एक बार
रक्षा बंधन में
आँखों में झूलता रहा
बहन का चेहरा
और गूँजता रहा
रह-रह के मन में-
'चंदा रे
मेरे भैया से कहना
बहना याद करे...'

चाँद के हाथों ही
भेजती रही संदेशा
अपने प्रेमी को
वह पड़ोसन लड़की
जो प्रेम करने के
जुर्म में
अपने ही घर में
कैद कर दी गई थी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाँद से लौटे हुए यात्री
बताते हैं
चाँद में
जीवन संभव नहीं है
अभी...।

पर कमाल है
कि जो चाँद
हमें विरासत में मिला है
वहाँ तो
कदंब का पेड़ है
और बुहारी करती
चक्की पीसती
बूढ़ी अम्मा भी...।

अपने बच्चे के
मुख मण्डल पर
काला टीका लगाती भाभी
ऐसे ही नहीं कहती–
'मेरे चाँद पर
नजर ना लगे किसी की।'

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तारों से बातें करते हुए

तारे
जो हमसे सहस्रों योजन दूर
चमकते-टिमटिमाते हैं,
द्रव्य-पिण्ड से परे
कुछ और भी होते हैं।

दिन भर की थकान से चूर
रात लौटकर
जब हम खिड़की खोल
बैठते हैं
तो निहारते हुए तारे
जैसे हमें पूछते हैं-
कहो कैसा बीता
आज का दिन!

जब छीन लेता है
कोई हमसे
हमारा इन्द्रधनुष
और किसी तूफ़ानी रात में
उखड़ जाते हैं हम
जड़ से,
तब तारे
हमारी आँखों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उतरते हौले से
और बुझने से बचा लेते हैं
भीतर की ज्योति को !

हम करते हैं प्रेम
किसी लड़की से
और फटी होती है
जेब हमारी
तो एक तारा तोड़कर
खोंच देते हैं उसकी वेणी में
चुपके से !

सीमा पर तैनात
जवान का खत
उसकी पत्नी को
गाँव में मिलता नहीं है जब
वह तारों से
बातें करते हुए
काटती है रातें!

दंगे-भूकंप
और आतंकी मार से
अनाथ हुए बच्चे
तारों की बस्ती में ही
अपने माँ-बाप को
खोजते-ढूंढते हुए
होते हैं बड़े !

गर मिट जायें तारे
आसमान की स्लेट से
तो हो जायेगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितना गड़बड़
किसान-मजदूरों की
घड़ी खो जायेगी
जंगली गाँवों की सुबह होगी
बहुत देर से।

तारों!
तुम मत आना
वैज्ञानिकों की बातों में
वे तुम्हें ग्रह-नक्षत्र-निहारिका
क्या-न-क्या
कहते हैं...
हमारे लिए
तुम रहना सदा वही
शुक्र... ध्रुव... सप्तर्षि..।

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस एक धरती ही

आसमान, सूरज, चाँद
और तारों की बातें
धरती के बिना
अधूरी है।

धरती पर खड़े होकर ही
हम जीते हैं
आसमान के नीलेपन को।

भरते हैं अँजुरी में
सूरज की उजास को।

धरती की
धड़कन से ही
चाँद, चाँद है
तारे, तारे हैं।

पूरे ब्रह्माण्ड में
एक धरती ही ऐसी है
जिसके दरवाजे
खिड़कियों में
चाँद-सूरज विराजते,
पूजे जाते हैं
आसमान तारे भी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह धरती ही तो है
जो हमें
आसमान में
उड़ने की ऊर्जा देती है
और कभी गिर जाते हैं
हम इस कोशिश में
तो वही हमें संभालती है।

सूरज बिफर कर
कभी जला देता है
हमारी फसल
तो धरती
अपने अंतस में
बीजों को पोसती
जड़ों को संभाले रहती है।

सफर में
कभी गुम जाता है चाँद
या दबोच लेता है
अँधेरा उसे
अपनी धड़कन तेज कर
धरती हमें रास्ता बताती है।

बादलों के झुण्ड बीच
फँस जाता है
तारों का काफिला जब
धरती अपनी पिटारी खोल
हमारे सपनों की यात्रा में
बिखेरती है जुगनू
चमकाती है चकमक पत्थर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक दिन
टूटती है
हमारी साँसों की डोर
और हमें
कोई नहीं अपनाता
बस
एक धरती ही
हमें गोद में लेती
चादर ओढ़ाती
और छाती से चिपटाकर
सदा-सदा के लिए
बिछ जाती है।

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुंदरता

तुम सुंदर हो
बहुत सुंदर
पर
तुम्हारी तुलना
चाँद से नहीं करूँगा।

नहीं कहूँगा
तुम्हारी आँखें
कमल-सी है
केश काली घटा-सी।

चाल हिरणी-सी है
बातें शहद-सी मीठी
नहीं कहूँगा
मैं ऐसा कुछ भी।

मैं तुम्हें
सिर्फ मनुष्य रूप में
देखता हूँ
और यह
कम सुखद नहीं है
कि कोई कोई
सुंदर होते हैं
तो मनुष्य रूप में ही।

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिश्ते का बनना

तुमसे रिश्ते का बनना
एक आदमी का
दूसरे से
जुड़ना ही तो नहीं है
यह एक नदी का
दूसरी से मिलना है
एक पेड़ का
दूसरे की जड़ को छूना है।

तुमसे रिश्ते का बनना
तुम्हारे साथ
चार कदम चलना ही तो नहीं है
यह एक-दूसरे के पतझर को
अपने अंतस में सहना है
वसंत को पोर-पोर जीना है।

तुमसे रिश्ते का बनना
महज एक रिश्तेदारी को ही
पोसना तो नहीं है
यह अपने हिस्से की धूप को
तुम्हारे कँपकँपाते आँगन में
बिखेरना है,
तुम्हारे घर के अँधेरे को
अपनी हथेलियों में समेटना है।

(2002)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं तुम्हें याद कर रहा हूँ

जेठ-बैसाख के
मुहाने पर बैठे
मैं तुम्हें याद कर रहा हूँ
कि चली आयी हैं वह राहें
जिन पर तुम चौकड़ी भरा करती हो।

जिनकी संगत में
तुम्हारी हँसी
फुहार बन छूटा करती है
वह पहाड़
वह जंगल
वह नदी
सब के सब चले आये हैं
एक-एक करके।

पंखा झलते
माथे का पसीना पोंछते
मैं तुम्हें याद कर रहा हूँ
कि चली आयी है
तुम्हारी साँसों से छूट
वह ऋतु रानी भी दौड़ कर
जो मेरे पतझर के सीने में
बिखेरती रही है बसंत।

(1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुपस्थिति में फैली उपस्थिति

तुम्हारी अनुपस्थिति के दिनों में
तुम्हारी उपस्थिति को
नये ढंग से
महसूस कर रहा हूँ।

जैसे महसूस करता है किसान
पकी फसल में
मिट्टी की उपस्थिति को
हवा पानी और धूप की
उपस्थिति को।

तुम मेरे हिस्से की
हवा पानी धूप हो
और मिट्टी भी !

तुमसे पक रही है
फसल मेरे जीवन की !!

(2004)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वप्न के उजड़ने के बाद

स्वप्न के उजड़ने के बाद भी
जीवन में कहीं
दबी रहती है चिंगारी।
उदासी के गहन अँधेरे में
डूब जाये चाहे पूरा चेहरा
आँखों में
कौंध ही जाती है बिजली !

चली जाती है...
अधरास्ते ही हमें छोड़कर
चली जाती है संगी वह मन की
पर हमारी साँसों से
उतर कहाँ पाती है
गंध उसकी देह की।

चाहे लाख जतन करें हम
छूटते नहीं हैं
हमारे अंतस के अँचरा में रचाये
उसके लाल-गुलाबी रंग !

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अँधेरे की उमर

जब रगों में
पसरने लगे
अँधेरा
और साथ छोड़ दे
दुनिया भर की
बिजलियाँ
प्रवेश करना
अपने भीतर
वहाँ जल रहे होंगे
सहस्रों दीये।

अँधेरे की उमर
चार पहर से अधिक
भला कब हुई,
खटखटाना
साहस और धैर्य की
कुण्डियाँ
सूरज
खुद दरवाजा खोलेगा।

(1994)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं धूप का एक टुकड़ा नहीं हूँ

मैं धूप का
एक टुकड़ा नहीं हूँ
जो आँगन में ही
फुदक कर
लौट जाऊँगा।

मैं तो
धरती के प्रांगण में
खुल कर खेलूँगा
चौकड़ी भरूँगा
हिरणी-सा
समूचे वन-प्रांतर में।

नापूँगा मैं
पहाड़ों की दुर्गम चोटियाँ
अँधेरे को नाथकर
चाँद से बातें करूँगा।

मेरी रगों में
सूर्य के जाये
अन्नदाता का खून है।
मेरी जड़ में
गर्माहट है
महानदी की कोख की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रीष्म हो
बारिश हो
कि हो सर्दी
देह की ठंडी से ठंडी
पतें तोड़
पसीना ओगराऊँगा।
मैं धूप का
एक टुकड़ा नहीं हूँ...

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुःख की रात

दुःख की रात
बहुत घनी हो रही है
और मैं आसमान में
उस तारे को तलाश रहा हूँ
जो कहीं न कहीं
मेरे नाम से चमक रहा होगा।

मुझे माँ ने बताया है
रात कितनी भी घनी हो
एक अदद तारे के सहारे
ब-खूब कट सकती है।

ज़िंदगी की राह
बहुत ठस हो रही है
और मैं धरती में
उस दरख्त को तलाश रहा हूँ
जिसकी जड़ किसी न किसी तरह
मेरे रग-रेशे से जुड़ी होगी।

मुझे बाबूजी ने समझाया है
राह जब ठस लगे
अपने से जुड़े दरख्त को याद करो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो हर ठसपन टूटेगा!
माँ ने काटी है
सहस्रों घनी रातें
बाबूजी ने की है
सहस्रों योजन यात्राएँ!

(1995)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जड़ की खातिर

ओ आसाढ़ के बादल
आधे रास्ते से ही
लौट रहे हो,
कोई बात नहीं।

कोई बात नहीं
सावन-भादो की
ओ काली घटाओं
कि बिना बरसे ही
तुम छोड़ रही हो
हमारे अँगना-दुआर।

हमें हरियाना है
हम हरियायेंगे
अपनी जड़ बचाना है
बचायेंगे।

धरती की कोख में
चुपचाप टहल रही है
हमारे हिस्से की जल धार।

(2004)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुकाम

नक्शे नहीं दिये
किसी ने मुझे
स्वयं रास्ते खोजे
मुकाम तक पहुँचा।

कभी कोई फल
मेरे मुँह में
नहीं टपके
हाथ साधे
झुकाये डाल
और तोड़े।

कोई नदी
झरना या कुआँ
कण्ठ तक नहीं पहुँचा
प्यास जब लगी
मैं ही उनके पास गया।

बैठे-बिठाये
साकार नहीं हुए
मेरे सपने-
कर्म की पाँख फैलाकर
सेते रहा हूँ उन्हें।

(1995)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं लौट आया

मैं ऊब चुका था
लड़ते-लड़ते ज़िंदगी से
और प्राय:
आत्महत्या के बारे में
सोचता था।

जहाँ भी हाथ डालता
असफलता ही मिलती थी
जिस पर भी विश्वास करता
धोखा ही खाता था।

पवित्रता की पराकाष्ठा समझ
जीने लगता
जिस किसी के भी प्रेम को
वह अंतत: छल ही साबित होता था।

थोड़ा-थोड़ा करके
इन सबसे घटती गयी थी
जीवन के प्रति मेरी आस्था
और मैं निकल पड़ा
एक दिन घर से।

राह पर
एक बैलगाड़ी में बैल की जगह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्री जुतती हुई मिली
जिसे उसका पति हाँक रहा था
आगे दस साल का एक लड़का मिला
जो घर छोड़ कर भाग गये बाप की ज़गह
चार बहनों वाली गृहस्थी का
बोझ अपने कांधे में उठाए
दौड़ रहा था।

दुनिया छोड़ देने की
चाह से भरे
बढ़े जा रहे थे कदम मेरे
कि मिली मुझे
अपनी ही संतानों द्वारा हकाल दी गई
एक सत्तर साल की बुढ़िया।

उल्टे पाँव मैं लौट आया
उस स्त्री
उस लड़के
और उस बुढ़िया की स्याह दुनिया बीच
स्वयं को खोजता हुआ।

(2000)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो मजदूर

चलो संगी बीड़ी सिपचायें...
पसीना सुखायें
थोड़ा सुस्तायें।

चलो उस पेड़ तले
सुख-दु:ख बाँटे।
तनिक दम ले
घर-परिवार की
गोठ गोठियायें।

मेरी तुम सुनो
तुम्हारी सुनूँ मैं।
भला कौन हमारा
इस 'बाजार' में
जिनको हम गोहरायें।

चलो संगी बीड़ी सिपचायें...
कुदालों को
धरती को
राम कहानी कहने दें।
गाँठ जीवन की
वे भी खोले-खुलायें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिशा-दिशा से
बंधे वे भी हर्मी-से
सपने उनके सब पिलियाये।

आयेगा न कोई मुक्तिदाता
'भरम काल' से
निकले निकलायें।

चलो संगी बीड़ी सिपचायें...
रोम कोई जुड़ायें न
आग दहकायें।

(2005)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जगदलपुर के अस्पताल में

दो दूर-दूर गाँव से
आये हम दो मरीज
शहर के इस अस्पताल में।

उसकी बोली गोंडी है
मेरी छत्तीसगढ़ी।

हम पूछ-पूछा नहीं सकते हैं
एक दूसरे का नाम,
जान-जना नहीं सकते
एक-दूसरे का पोस्ट-मुकाम।

बस वह मुझे देखता है
मैं उसे देखता हूँ
मौन ही मौन
हमारा संवाद होता है।

उसकी तकलीफ उसकी है
मेरी तकलीफ मेरी
पर जब कभी कराहता है कोई
लगता कि हमारे बीच
कोई बहुत गहरा रिश्ता है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस अस्पताल की
बियाबान दोपहरी
पहाड़ से भारी एक-एक पल,
एक-दूसरे का दु:ख नापते-नपाते
सहज कटता है !

(1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्पताल में स्त्री

यहाँ
अस्पताल में
बेटी भी
माँ हो जाती है

माँ हो जाती है
पत्नी भी

यहाँ
अस्पताल में
जाग जाती है
आदमी के भीतर की स्त्री।

(1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्पताल का नारियल पेड़

यह पेड़
नारियल का
मुझसे बातें करता है रोज।
मेरे भीतर
आ बैठता है
घंटे कई घंटे।

फल से लदे
इस पेड़ का
कोई खत
मुझे नहीं मिला
ना ही मैंने
कभी इसे लिखा।
देखो फिर भी
जुड़ आया है
इससे एक रिश्ता !

यह शहर
चाहकर भी
मिलने नहीं देता है
दिनों तक दोस्तों को !
और जो मिल गये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो कर देता है अलग
देखते ही देखते।

ऐसे में
यह पेड़
नारियल का
लगता है सगा
बस्तरिया दोस्तों-सा !

(1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदिम-मितान

थकने लगती है
आँखें जब
सुदूर जंगली इलाके में
किसी अपने को न पाकर,
ऊँचे तनकर खड़े पेड़
सबसे करीबी बन
थपथपाते हैं कंधे।
आश्वस्त करती हैं चिड़ियाँ-
हममें भी है अपनापन।

सुबह से दोपहर
दोपहर से साँझ
और साँझ से
घिर आती है रात
पर दिखता नहीं है
दूर-दूर तक
जब कोई शख्स
तब चमकता हुआ चाँद
भेजता है पैगाम
मैं हूँ ना
मैं
मैं तुम्हारा आदिम-मितान !

(1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गोधूलि

आज साँझ
यहाँ बस्तर में
मुझे मेरे गाँव का
आसमान मिल गया।

सूरज यहाँ भी
तब सिंदूरी था
और साँझ
गाढ़ी-गाढ़ी-सी।

कहाँ हूँ दूर मैं
अपने गाँव से
कहाँ दूर
गलियों से
कहाँ दूर सरहद से।

क्षितिज तो
यहाँ भी
डग भर पास लगा।

वही अन्न
वही जल
वही खुशबू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वही पवन
और वही छटा
गोधूलि की।

आज साँझ
यहाँ बस्तर में
मैंने अपने गाँव के
सूरज को
ढलते हुए देखा।

(1998)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेड़

मैं इस दुनिया में
आने वाला हूँ
यह माँ के बाद
पेड़ों को ही पता चला
और पहुँच गए
माँ के गर्भ में मुझसे मिलने
आम-इमली-करौंदा।

जब से होश संभाला है मैंने
पेड़ को
अपने रग-रग में
धड़कता हुआ पाया है-

जिस धकेल गाड़ी में
चलना सीखा
वह पेड़ के
एक टुकड़े से ही बनी थी।
पेड़ का ही एक अंश है
वह बाँसुरी
जिसकी धुन में
सदियों से मगन हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल्पना के कोरे पन्ने पर
उभरे चित्र को
रंगा जब पहली बार
पेड़ की डंगाल से
कूँची बनाई थी
फूल-पत्तियों से
उगाहा था रंग।

पेड़ की जड़ से
बातें करता हूँ
तो पता चलता है
पुरखों की नग्न देह को
ढँका सबसे पहले
पेड़ ने।

पुरखों की आँखों में
घर का सपना
पेड़ों की
मजबूत शाखाओं से जन्मा
और बीता
गुफाकालीन भयावह युग।

पुरखों के जीवन में
एक दिन
धरती खेत बनकर मुस्कुरायी
तब पेड़
हल बनकर
उनके जन्म-जन्मातर के
संगी-सा उतरा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यात्रा पथ पर
आड़े आने लगी नदियाँ
तो पेड़ नाव बन गये
जिससे लांघे गये
सातों समुद्र,
पार की गई
सभ्यता की कई-कई वैतरणी !

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पवन

मनुष्य के कण्ठ से
पहला शब्द फूटा
तो उसे
पेड़-पक्षी-पर्वत-झील
झरने और समुद्र के हृदय तक
पहुँचाया पवन ने।

मनुष्य ने फूँका शंख
तो पवन ने
उसे नाद दी।
बनाया ढोल-मृदंग
तो थाप दी।
पवन ने दिशा दी
उस पहले तीर को
जिसे मनुष्य ने
सिरजते ही
छोड़ दिया था शून्य में।

मनुष्य की राह
लम्बी होती गई
थकान से टूटने लगा वह
तो पवन ने उसे
घोड़े पर बिठाया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिसकी टापों की गूँज में
दर्ज है
मनुष्य की सुदीर्घ जय गाथा।

मनुष्य ने
आसमान में उड़ने
यान की कल्पना की
तो पवन ने उसे
पीठ पर साजा,
सोचा चाँद पर जाने की
मंगल से
जीवन-बीज ढूँढ लाने की
तो वह
हँसी-खुशी घूमा लाया।

सड़क पर गतिमान
तुम्हारी हमारी साइकिल को
पवन की दरकार
पवन के लाड़-दुलार से
घूमती है
हमारे बच्चों की फिरकिनी
थिरकती है कठपुतली।

पवन की तरंग को
इधर खूब साधा है हमने-
अभी-अभी मैंने
घर बैठे ही
सुदूर बस्तर के
अपने कवि मित्र से
बात की
उसके सुख-दुःख जाना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस एक बटन दबाया
और स्वयं को
विश्व ग्राम में
खड़ा पाया।

मनुष्य के पत्थर बन जाने में
कोई बहुत वक्त नहीं लगता
यह सिर्फ पवन जानता है
जो हमारी साँसों को
नम रखता है
और जीवन की जड़ में
रस-गंध सींचता है !

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पानी

पानी से
हमारी पहली पहचान
तब होती है
जब कागज की कश्ती में
पार करतें हैं हम
बचपन की नदी
और सावन कई दिनों तक
हमें भिगोये रहता है।

देह में चढ़ता है पानी
धीरे-धीरे
और पुख्ता होते जाते हैं
हमारे कदम।

पानी का रिश्ता
हमारी आँखों से
सबसे सघन होता है,
वह लबालब होता है जब तक
रंगों की परख
संभव होती है तभी तक।

दुनिया की अँधेरी गलियों में
जगमगाती बिजली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पानी के उत्सर्ग की गाथा है।
पानी के उत्सर्ग पर ही
टिका होता है
हमारे-तुम्हारे घरों का स्थापत्य।

घर में
पहला कदम रखती है
नववधू जब
द्वार पर दादी-नानी
पानी दरपती हैं।
पानी से ही
वे करती हैं स्वागत
खलिहान से आये नवान्न का
रणभूमि से लौटे जवान का।

पानी दौड़ता है
जीवन की सूखी नदियों में
और पथराया मन भी
रुनझुन बज उठता है।

पानी टहलता है
दबी-सोयी जड़ों की
बस्ती में
और लौट आती है
निर्वासन झेलती हरियाली।

ज़िंदगी की कड़ी धूप में
सफर करता हुआ
मुसाफिर कोई
गश खाकर गिर पड़ता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो पानी उसे
दवा सा मिलता है।

वह उस पनिहारिन की आँख में
सबसे चौड़े-खुले सीने
और अपनापा भरे कंधे-सा
चमकता है
जिसका दु:ख बाँटने वाला
उसके घर में
कोई नहीं होता है।

अनुपस्थिति में भी
उपस्थित रहने का हुनर
दुनिया को पानी ने सिखाया।
पानी ने सिखाया पुनर्नवा होना
प्रकृति के
पोर-पोर को !

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आग

आग से हमारा रिश्ता
उतना ही जीवंत
और गहरा है
जितना कि पेड़, पवन और पानी से।

पेड़, पवन और पानी की तरह
आग भी देवता होता है
यह बताते हुए
चेताती रहती हैं दादी-नानी
बुझे नहीं कभी
आग चूल्हे की
खयाल रखना
खयाल रखना कभी बुझे नहीं आग
किसी भी सीने की।

आग के महाकुण्ड में
पककर ही
नारंगी की तरह
गोल सुंदर हुई है
हमारी यह धरती।

आग में तपकर ही
खरा होता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारी ज़िंदगी का सोना,
असल रूप धरता है
किस्मत का लोहा।

आग से
हमने पानी को डबकाया
तो दुनिया की पटरी पर
दौड़ी पहली रेल गाड़ी।

कुम्हार के आँवे को सुलगाया
तो हमें
पकी हण्डी, मटकी
और सुराही मिली।
मिले इंट-खपरे
खिलौने और गमले।

गृहिणी के हाथ में
आग जब पहुँची
हमने अन्न की मिठास को
भरपूर जाना।

गोरसी में
शिशु देह की सिंकाई के लिए
जब सिपची वह
हमने माँ के गर्भ की
दहक के मर्म को पहचाना।

आग की जोड़ का संवेदनशील
दुनिया में दूसरा कौन होगा
जो बुझने के बाद भी
राख के ढेर में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धड़कती रहती है।
एक ही फूँक से
जो दहक उठती है।

तब आग की
एक चिंगारी ही बहुत होती है
जब शासक की धमनियों में
पसर जाता है ठंडापन
जुड़ा जाते हैं विचार...!

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस आदमी का जीना

वह जीत
कोई जीत नहीं होती है
जो मिली हो
बिना युद्ध के मैदान में उतरे।

वह मंजिल
कोई मंजिल नहीं होती है
जहाँ पहुँचा गया हो
किसी के कांधे पर चढ़कर।

वह सुख
कोई सुख नहीं होता है
जो चाहा गया हो
बिना दु:ख-पीड़ा की आँच से गुजरे।

उस आदमी का जीना
कोई जीना नहीं होता है
जो सोचता हो
फकत अपनी ही जीत
अपनी ही मंजिल
और अपने ही सुख के बारे में।

(1993)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे जो बैठे ठाले खाते हैं

वे जो
बैठे-ठाले खाते हैं
उनके घर की
ताजा पुती दीवारें भी
मटमैली दिखती हैं।

ऐसे लोगों की गायें
ढंग से दूध नहीं देती हैं
उनके कुएँ का पानी
प्राय: मीठा नहीं लगता है।

फलती-फूलती नहीं है
उनकी बाड़ी में
सब्जियाँ
ना ही
ठीक से अन्न देते हैं
उनके खेत।

ऐसे लोगों के दुआर में
खेलना पसंद नहीं करते हैं
मुहल्ले के बच्चे
ना ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके अहाते में
बैठी दिखती हैं औरतें।

चाहे हों
वे कितने ही विचारवान
धनी-मानी
और गुणवान
मुहल्ले की
किसी भी मीटिंग में
ऐसे लोगों की
राय नहीं पूछता है कोई।

वे जो
बैंठे ठाले खाते हैं
उनके घर सामने के रास्ते
बेहद उदास
और थके-हारे दिखते हैं।

ऐसे लोगों के
घर में
उतरने वाले मेहमान
तन कर नहीं
सिर झुकाकर ही
गुजरते हैं।

(1996)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तिकड़मी

सह उप
या ऐसे ही
किसी पद से नहीं
सीधे हम सामान्य जन से
उठकर
एक दिन
एक आदमी
प्रधान बन जाता है।

वह बिठाये होता है
तिकड़म।

उसके तिकड़मीपन की
दाद देते हैं हम
और सराहते हुए
किस्मत अपनी
नाक ऊँचा कर
कह रहे होते हैं-
हममे से गया है
सो हमारा सोचेगा ही सोचेगा।

मोहाये रहते हैं
बहुरूपी-गतिविधियों पर उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे ही हम बहुत दिन
और यदा-कदा
छलक पड़ते
उसके अंतस जल से
हरियाये रहते हैं
अपने मन का
हरेक बिरवा।

लेकिन
आखिरकार एक दिन
जब मुक्त होता
हमारा दिमाग
दिल की पकड़ से
और स्वप्न-राग अलापते-अलापते
थक चुका होता है
हमारा कण्ठ
हम पूछते हैं-
क्या कुछ हो रहा है
तुम्हारे राज में
हमारे लिए?

तब जो आँखें उसकी
हमारी ओर खुलती हैं
नये बन चुके राज-मार्गों के
तीरे-तीर वहाँ
हम पड़े होते हैं
जैसे बचे-खुचे गिट्टी-बोल्डर...।

सदा से
जोहार में ही
जुड़ते आये हाथ उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लहरा उठते हैं हवा में जो
लगता है ढलते-ढलते
लाखों-लाख साँकलें
परख रहीं हो जैसे
क्षमता हमारे तन बदन की।

जमीन पर नहीं
वह हमारे सिर पर
बस रहा होता है
और हममें से
जब जिसे चाहे
बहुत ऊँचे ले जाकर
नीचे दन् से
पटक रहा होता है।

(1990)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हद

आप सपने में
शिखर पाले हुए बैठे हैं
और सीढ़ी को
पूरी तरह नकार रहे हैं।

नये मकान की उमर
सौ से कम नहीं आँकते
और नींव देखें तो
बीत्ते भर गहरे में डाल रहे हैं।

जो देखें मोहा जायें
जूते ऐसा चमकदार चाहते हैं
पर मोचियों की जात ही
आपको भाती नहीं है।

दुनिया के तमाम लोग
आपके अन्न से पले-पुसें सोचते हैं आप
पर किसान-मजदूरों की
देह-गंध ही आपको सुहाती नहीं है।

केले खाकर
छिलके राह पर फेंक देते
और रहते हैं इस मुगालते में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि आपके पाँव उस पर पड़ें
तब भी आप फिसले न गिरें।

आप करते हैं
एक-एक कर बेइज्जत हमें
और जीते हैं इस भरम में
कि हमारे सामने से
आप गुजरें
तो हम सिर झुकाएँ
जूतियों तले बिछ जाएँ।

श्रीमान कहिए
कहिए श्रीमान
क्या आप हद नहीं करते हैं।

(1990)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुनाव

यह नयी सरकार चुनने का वक्त है
और हमारी स्थिति
बहुत विकट है।

हम जिन्हें चुन सकते थे
जगह उनके खड़े होने योग्य
बिल्कुल नहीं रही।

हम जिन्हें खारिज ही करना चाहेंगे
उन्हीं में से चुनने के सिवा
कोई विकल्प नहीं।

यह नयी सरकार चुनने का वक्त है
और हम जिन्हें चुनने जा रहे हैं
उनके चुनाव के लिए
बहुत-बहुत शर्मिंदा हैं।

(1999)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंबानी के सपनों में पल रहे इस देश में

फिर एक नयी सरकार
हमारे सामने है
हम फिर
एक नयी सरकार के
शासन में है।

एक से दूसरी
दूसरी से तीसरी
तीसरी से चौथी
पाँचवी... छठवी... सातवीं
कितनी ही सरकारें
हमने चुनीं,
कितनी ही खारिज़ की।
पर यहाँ
कुछ चीजें हैं कि
कभी नहीं बदली
कभी नहीं सुधरी
जैसे कि
फगनूराम गोड़ की
हड़ियल काया में लटक रही
यह कमीज
बाप-दादा के जमाने से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो फटी है
तो अब तक
सिली-तुनी ही न जा सकी
और ऐसे ही
रामप्रकाश सिंह के
पाँवों में घिसट रही यह चप्पल
घिसटने को
अभिशप्त रही है
पहले बड़े
फिर मंझले भाई के
थके-हारे पाँवों में !

फगनूराम की
कमीज का फटापन
और रामप्रकाश की
चप्पल की घिसटन
हर सरकार को
दिखती है।
इन्हें बदलने और
सुधारने की बातें भी
हर सरकार करती हैं
पर किसी भी
सरकार के लिए
कहे हुए को
पूरा करना
अब कोई जरूरी तो रहा नहीं !

और टाटा-बिड़ला से
होते-हुआते
अंबानी के सपनों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पल रहे इस देश में
फगनूराम गोंड़
और रामप्रकाश सिंह
सरकार को
एक वोट के सिवा
आखिर देते ही क्या हैं ?

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवमूल्यन

इस साल और घटा रुपये का मूल्य
इससे थोड़ी और बढ़ी चिंता सरकार की
थोड़े और हलाकान हुए हमारे अर्थशास्त्री।

चीजों के दाम बढ़े
बिगड़ती अर्थव्यवस्था का रोना रोये
तमाम पढ़े-लिखे।
स्वयं की चुनी सरकार को
रह-रह कर कोसती रही जनता फिर।

रुपये का अवमूल्यन, चिंता-हलाकानी
रोना-गाना आदि किन्हीं के लिए
और किन्हीं के लिए तो
यहाँ भारी हुआ एक-एक पैसा भी।

इस पूरे साल भँजते रहे फिर दस-पाँच में ही
लाखों करोड़ो जन।
रौंदे गये चंद चिल्हरों के पाँव तले
थोक के थोक फिर हमारे भाई-बंधु, माँ-बहन।

इस साल, हाँ इसी साल
धर्म नीचे गिरा एक और चवन्नी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फूटी कौड़ियों में नपाये 'कर्म' को फिर
बड़े-ब्-बड़े सेठ और व्यापारी।

घटा रुपये का मूल्य इस साल
इस साल घटा और भी मूल्य आदमी का।

(1992)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दण्ड

जात से बाहर खत्म होता है जीवन
मेरे गाँव में अब भी
अब भी समाप्त होता है यहाँ
गाँव-समाज से पार दुनिया की सरहद।

यहाँ होती नहीं हैं पंच-पंचायत से बड़ी
अन्य कोई अदालत।

अभी कल ही एक जन
जात तो जात
बाहिर कर दिया गया यहाँ
गाँव-समाज से भी।

समाज बाहिर एक परिवार की स्त्री
जिंदा गाड़ दी गई थी बीच बस्ती
पानी चुराने के दण्ड में परसाल ही।

कहीं जंगल बीच नहीं
मेरा गाँव राष्ट्रीय राजमार्ग में पड़ता है
सैकड़ों पेट की रोटी को दबाये
कुछ दाढ़ जहाँ अब भी ज़िंदा हैं।

(1991)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध की बात करने से पहले

युद्ध की बात करने से पहले
परिंदों के पंख में पलते
उजले-धुले, नीले
आसमान को देखो !
देखो-
पेड़ों के तन-मन में
लहराते हरियर समुद्र को !!

युद्ध की बात करने से पहले
बादलों को पुकारती
खेतों की ऊर्वर मिट्टी को देखो !
देखो-
धान की बाली में
मोतियों-सी चमकती
ओस की बूँदों को !!

युद्ध की बात करने से पहले
गमला गढ़ते
कुम्हार के चेहरे में खिले
फूल को देखो !
देखो-
पालना बनाते बढ़ई की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखों में खेलते
शिशु की अठखेलियों को !!

युद्ध की बात करने से पहले
पतंग उड़ाते, बाँटी खेलते
बच्चों की हथेलियों में धड़कते
आसमान और मैदान के
विस्तार को देखो !
देखो-
रंगोली पारती
व्रत-उपवास रखतीं
बहनों के सपनों में झिलमिलाते
दूधिया संसार को !!

युद्ध की बात करने से पहले
डायरी के पन्नों में दर्ज
अपने मित्रों, परिजनों की
जन्म तारीखों को देखो !
देखो-
उम्र की गुलाबी किताब में
बड़े जतन से छुपा रखे
प्रेम पत्रों को !!

युद्ध की बात करने से पहले
देख सको तो
युद्धों में मिली
बैसाखियों को देखो !
देखो...
देखो-
युगों-युगों से भिंज कर भारी हो रहे
आँचल, चुनरी और दुपट्टे को !!

(2002)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमेरिकी युग

अमेरिकी युग
शुरू हुआ
और सन् 2002 में
स्वतंत्र कराया गया
अफगानिस्तान को।
सन् 2003 में
इराक को।

अमेरिकी युग
शुरू हुआ
और ईरान को
सीरिया को
अहसास दिलाया गया
ज़रूरत है तुम्हें भी
स्वतंत्र कराने की।

अमेरिकी युग
शुरू हुआ
और शुरू हुई
नयी गाथाएँ–गुलामी की।

(2003)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पते वाली डायरियाँ

हम चिट्ठी लिखना भूल रहे हैं
और एक-एक करके
हमारे घरों से
लोप होती जा रही हैं
पते वाली डायरियाँ

डायरियों का लोप होना
सिर्फ डायरियों के
लोप होने का
प्रसंग होता
तो कोई बात न थी

यह
बहुत से रिश्तों की
महक का लोप होना है
लोप होना है
बहुत से जन्म दिनों
बहुत-सी जरूरी तिथियों का।

भूलने और लोप होने के
इस भीषण दौर में
मैं जो
पते वाली डायरियों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

याद कर रहा हूँ
क्या यह
महज पते वाली डायरियों को ही
याद करना है!
या
याद करना है
उन सड़कों
मोड़ों
गलियों
मुहल्लों
मैदानों
बाग-बगीचों
हाट-बाजारों
चौक-चबूतरों
और अड़ोसियों-पड़ोसियों को
जो हमारे प्रियजनों के
पोस्ट-मुकाम को
मुकम्मल रूप देते हुए
हमारे जीवन के भूगोल में
रच-बस गये होते हैं !!

(2004)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सजा

नंदीग्राम के खेतों में
पुलिस की गोली से
पच्चीस किसान
मारे गए !

नंदीग्राम के किसान
खेतों में
आखिर कर क्या रहे थे ?

जनम जात उजड्ड वे
सरकारी काम-काज में
दखल दे रहे थे !!

(2007)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्महत्या के बीच

इस साल
देश के
अनगिनत किसानों ने
आत्महत्या कर ली।

बहुतों के कपास में
कीड़े इतने हुए
कि कीटनाशक
किसानों ने
खुद ही पी ली।

बहुतों को
प्याज-टमाटर की
अधिक उपज ने डुबोया
और महाजन के
खाते में चला गया
बेटी की नथ-विंदिया
पत्नी का मंगल सूत्र।

बहुतों के धान को
बेमौसम बरसात ने
रह-रहकर धोया
और सूखा का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूला-बिसराया दर्द
हरा होकर
उनकी आँतों में
उतर गया...।

इस साल
बहुत से मजदूरों
बहुत से कर्मचारियों
और बहुत से
बेरोजगारों ने भी
आत्महत्या कर ली।

ऐसा नहीं
कि इनमें से
किसी ने भी
कोई कम लड़ा हो
लड़े...
हालात से सबके सब
जी भर कर लड़े
पर अपनी हर लड़ाई में
वे इतने अकेले होते गये
कि जब थके तो
सिर टिकाने को
उन्हें कोई कंधा
नहीं मिला
टूटे तो
सहारा देने
कोई बाँह न मिली।

(2001)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी, काठ और लोहा

मिट्टी को
कुम्हार के हाथों की छुअन
सबसे ज़्यादा पसंद है
पसंद है खेतों को सबसे ज़्यादा
किसान की देह गंध।

सूखे पड़े काठ
बढ़ई के बींधना-पटासी
बसुला और आरी को ही पसंद करते हैं
पसंद करते हैं लोहे
लुहार के घन को ही।

पर यहाँ किसी को इससे क्या-
अब तो मिट्टी तरसने लगी है
कुम्हार के हाथों की एक-एक छुअन के लिए
किसानों की लाश ढोते-ढोते
दरकने लगी है खेतों की छाती।

सूखे पड़े काठ के सपनों से भी
लोप होने लगे हैं
बींधना-पटासी बसुला और आरी
जंग खाए लोहे का मन भी
होने लगा है भारी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी अपना दु:ख किससे कहे
किसके कांधे पर सिर रख कर रोये काठ
लुहारी-लाड़ से विरत हो रही
इस दुनिया में
कौन सुनेगा लोहे का विलाप !

(2010)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुकाल में

इस बरस
बारिश अच्छी हुई
माहो-कटवा की मार से भी
बची हुई है फसल।

खड़ी फसल देख
मेड़ पर बैठा जगतू
सोच रहा है-
बेटी के हाथ पीले कर ही देगा
इस रामनवमी में।

फसल कटी
खलिहान पहुँची
मिंजाई हुई
अन्न माता घर आयी
और दौड़े आया पीछे-पीछे
गाँव का महाजन।

मिला नोटिस बैंक का
दो साल के
नहर-नाली टैक्स की
याद दिलाने घर आया
अमीन पटवारी भी।
जगतू ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महाजन का
पाई-पाई चुकाया
चुकता किया बैंक का ऋण
भरा नहर-नाली का
टैक्स भी
इस तरह से जगतू ने
जैसे गंगा नहाया।

रही बात बेटी की
तो जगतू ने
बड़े धूम-धाम से
नियत समय पर
किया उसका ब्याह
दामाद को दी
उसकी पंसद की टीवी
और हीरो साइकिल...
सकत भर की
बारातियों की आव-भगत
गोत्र जनों को
जेंवाया भरपूर कलेवा

हाँ,
इस बीच
हमारे गाँव के दुःख में
जुड़ गया एक और दुःख
कि जगतू राम वल्द भुखऊ कलार भी
जा खड़ा हुआ उनमें
जो रहे-सहे खेत बेचकर
इस सुकाल में भी
हो गये
भूमिहीन खेतिहर!

(2007)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जरखरीद-बिक्री

दगा दे देता था ऊपर वाला
और हम जूझते थे
अकाल-दुकाल से
रोजी-मजूरी कर
जैसे-तैसे काट लेते थे
जिनगी फिर भी।

बिफर जाता था बादल कभी
कभी पाला मार जाता था
और खून के आँसू रो
खींच ही लेते थे
घर-गिरस्थी की गाड़ी।

ऊँच-नीच किसी बात पर
कुपित हो
गाँव के मुखिया-महाजन
हमारी खड़ी फसल बीच
ढील देते थे अपनी मवेशी
किस्मत को कोसते
सह लेते थे यह जुलुम भी।

अब की बेर आयी आफत
पाले-सूखे से बड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब का जुलुम
सब जुल्मियों के ढाये जुलुम से बड़ा-
हमारी ही सरकार ने
हमारी छाती पर चढ़
हमारी धरती मइया को
जरखरीद बेच दी।

(2008)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बत्तीस डिसमिल जमीन

लगते आसाढ़ में
आ बिराजे बादल
गाँव के आसमान में।

वे बरसना चाहते थे
झम झमा झम...
तर करना चाहते थे
धरती मइया की
झुलसती देह को
तलफलाते ताल-पोखर को।

बादल उतरते थे
आसमान से नीचे
बार-बार
और लौट जाते थे
बिन बरसे अधबीच से
हर बार।

गाँव के सिवान में
नहर-पार पर बैठा
देखता रहा मैं
यह दृश्य
चकित भाव से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चढ़ते-उतरते
बादलों का एक झुण्ड
बिन बरसे
जब गुज़रा
मेरे पास से
पूछा मैंने उससे-
क्या बात है,
क्या सोच रहे हो
भाई बादलों...
भूल गये हो
बारिश की धुन
या अगोर रहे हो
बिछुड़ गये
अपने किसी सहोदर को?

बादलों के झुण्ड में से
सबसे सघन
एक बादल ने कहा-
''बीते क्वाँर में
जिस खेत-खार में
धान की लहसती बालियों को
छेड़ते-गुदगुदाते
हम लौटे थे धरती से
दिख नहीं रहे हैं वे कहीं !

नहीं दिख रहे हैं
कहीं वे किसान
जिनकी बाट जोहती
आँखों में ही
सबसे पहले उतरते रहे हैं हम
बरसों बरस से !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं दिख रहे हैं
जाने-चिन्हें
वे बनिहार-बुतिहार...
मेड़ पर रखवार जस खड़े
वे हड़रा-बहेड़ा
आँवला-तेंदू और चार
जो क्वाँर में
बिदाई के बखत
बड़ी बेकली से
हमें कहते रहे थे-
भूलना नहीं...
आ जाना हर हाल में
जेठ के उतरते-उतरते !''

यह गाँव वही है
वही धान-पान
वही बनिहार-बुतिहार
किसान वाले...
सुआ-ददरिया
करमा की तान वाले...।
मैं तफसील से
कहना चाहता था जो कुछ
कह दिया मुझसे पहले
पास ही चलते डोजरों की
गड़गड़ाहट ने-
'खेत-खार
अब कहाँ के...
कहाँ के किसान...
किसान अब वर्कर होंगे
यहाँ बनने वाली फैक्ट्री के !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनिहार-बुतिहार
चले गये शहर
काम की तलाश में
और जिनसे छूटा नहीं
गाँव का मोह
वे बंध गये हैं
ईट ठेकेदारों के ठीये से !

अब मेरे पास
सुनाने को
जड़ से उखड़ते पेड़ों के
कारुणिक किस्से थे...
सूना पड़ी देहरियों के
दीयों का विलाप था...
गाँव की
निर्जन गलियों में
मुआवजे-आश्रित जीवन का
कंपकंपाता-डोलता
शिलालेख था !

बादलों का मन
टूक-टूक हो रहा था
और भरे कण्ठ से
वे गाने लगे थे
अंतहीन शोक गीत...।
ऐन इसी बखत
सबसे सघन
उसी बादल ने
उच्चारा था धाड़े मारते-
"तो छीन ही ली
भुइँ खोरों ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमसे हमारी एक और
हरियर धरती...
ले ली फिर भक
हमारे कुल गोत्र के
रच्छकों की...।''

''नहीं...नहीं ऽऽऽ
नहीं ऽऽऽ नहीं...ऽऽऽ
नहीं छीन सके हैं
जुल्मी जमीन खाऊ
सब कुछ अभी...
बरसो...
बरसो...
अटाटूट बरसो...
ओ इंदल देवता के दूतों
दहक रही है
मेरे खेत की माटी
सुलग रही है
मेरी बूढ़ी छाती !''
–यह गाँव की
सत्तर वर्षीय
सतरूपा मरारिन थी
जो जबड़ा पसार रहे
फैक्ट्री के सामने पड़ती
अपनी बत्तीस डिसमिल
जमीन को
जीते जी न छोड़ने की
कसम खाये बैठी थी !

(2009)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक विश्वसनीय और अपने समय के प्रति सजग एवं चौकन्नी जनपदीय कविता का सधा हुआ स्वर इन कविताओं में व्यक्तित्ववान हुआ है। अपने को लेकर यश:कामी एवं महत्त्वाकांक्षी न रहने वाले रजत कृष्ण की ये कविताएँ व्यक्तित्व और कृतित्व के दोनों पाटों को दुरंगा नहीं बनाती, अन्यथा आज व्यक्तित्व-कृतित्व के बीच की खाई ने, कविता और कवि दोनों को अविश्वसनीय बना दिया है। यहाँ जो कविता है वह निश्छल, किंतु गंभीर समझ से निष्पन्न हुई एक प्रदीप्त कविता है, जो पाठक के मन के भीतर के अँधेरे कोनों में छिपे हुए कूड़े-कचरे को बुहारने का हौसला भी रखती है।

किसान-जीवन की सहकारी उत्फुल्लता के साथ उसके जीवन के गहरे दु:ख-दर्द और त्रासदियों के अनेक 'शोक-गीत' इन कविताओं के रंग को गाढ़ा करते हैं। वैश्वीकरण की साम्राज्यवादी अर्थ-प्रक्रिया ने श्रम-संलग्न दुनिया को जितना छला है, उतना इतिहास में शायद ही पहले कभी हुआ हो। कवि के शब्दों में पिछले दो दशकों में देश में एक 'जुल्मी जमीन खाऊ' वर्ग बहुत तेजी से उभरा है। किसान-जीवन पर जैसे संकट के बादल घिर आए हैं। लेकिन पिछले दिनों उभरी किसान-शक्ति ने बतला दिया है कि इस देश में उसके होने का भी कोई मायना है। इस संदर्भ में इस संग्रह की 'बत्तीस डिसमिल जमीन' को जरूर पढ़ा जाना चाहिए। पता चलेगा कि यह कविता अपने समय से बेखबर नहीं है।

राजनीति व अर्थनीति के देशी-विदेशी संदर्भों से सृजित कुछ कविताएँ कवि की विश्व-दृष्टि से परिचित कराने वाली हैं। इस तरह, इनका फलक हमारे समय के आर-पार तक जाता है। ये तुकान्त कविताएँ नहीं हैं, किंतु लय में इस तरह पिरोयी हुई हैं कि मजाल कोई ईंट कहीं इधर-उधर खिसक जाए। खूबी की बात यह भी है कि कवि ने अपनी कला-भाषा का आविष्कार कर लिया है। वह जिसे जितना देखता है, स्पर्श करता है, सूंघता है, सुनता है और आस्वादन करता है, वहीं से उनकी भाषा-बोली भी लाता है। भाषा के भीतर बोली के रचाव ने इनकी रचनात्मक व्यंजना को दुगुना कर दिया है। छत्तीसगढ़ी जमीन के ठाठ से रची गई इन कविताओं से आज की कविता और समृद्ध होगी, ऐसा मैं मानता हूँ।

–डॉ. जीवन सिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रजत कृष्ण

जन्म : 26 अगस्त, 1968, छत्तीसगढ़ के धमतरी जनपद के लिमतरा गाँव में, एक किसान परिवार में।

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी साहित्य एवं 'विष्णुचंद्र शर्मा और उनका रचना संसार' विषय पर पीएच.डी.।

प्रकाशन : विगत 20 वर्षों से देश की विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ, समीक्षा, लेख एवं टिप्पणियां प्रकाशित। लघु पत्रिका 'सूत्र' एवं 'संकेत' के अंक कविताओं पर केन्द्रित, छत्तीसगढ़ की युवा कविता पर शोध परक पुस्तिका 'समय के शब्द'।

संपादन : 'सर्वनाम त्रैमासिक' का अंक 82 (अप्रैल-जून 2006) से संपादन।

सम्मान : बस्तर के लोक कवि ठाकुर पूरन सिंह स्मृति 'सूत्र सम्मान' (जगदलपुर) बालाघाट के जनकवि लेखराम चिले 'निःशंक' स्मृति सम्मान (बालाघाट) माता सुंदरी फाउण्डेशन उदीयमान प्रतिभा सम्मान (रायपुर)।

अन्य : पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर में एम.फिल. के तहत 'छत्तीसगढ़ की युवा कविता में रजत कृष्ण का अवदान' विषय पर सन् 2003-04 में लघु शोध और 2010 में 'रजत कृष्ण : रचनात्मकता का जीवन और जीवन की रचनात्मकता' विषय पर पीएच.डी.।

संप्रति : शासकीय महाविद्यालय बागबाहरा में सहायक प्राध्यापक। 'सर्वनाम' त्रैमासिक का संपादन।

संपर्क :

वार्ड नं.-04, पुराना थाना पारा, बागबाहरा

जिला : महासमुन्द (छ.ग.) 493449

मो. : 9755392532, 8959271277

फोन : 07707-242578, फैक्स : 07707-242678

ई-मेल : sarvanam_patrika@yahoo.com

संकल्प प्रकाशन

बागबाहरा, जिला : महासमुन्द (छ.ग.)